ShodhVichar: Journal of Media and Mass Communication
October-December 2026 2(3)
https://shodhvichar.com/

Original Article

# THE EVOLVING FORM OF HINDI POETRY IN THE DIGITAL AGE: A CRITICAL STUDY OF THE LANGUAGE, CRAFT, AND SENSIBILITY OF 'INSTAGRAM POETRY'

# डिजिटल युग में हिन्दी कविता का बदलता स्वरूप : इंस्टाग्राम-कविता की भाषा, शिल्प और संवेदना का आलोचनात्मक अध्ययन

**Dr. N.P. Prajapati** [1*]
[1] Assistant Professor and Head of Department, Hindi Institute for Excellence in Higher Education, Bhopal, Madhya Pradesh, India

## ABSTRACT

**English:** Twenty-first-century Hindi poetry, which has moved from the printed page to the mobile screen, is undergoing significant changes in its medium, communication, and aesthetic standards. This research paper is a critical study of the language, visual craft, and sensibility of "Instagram poetry" developed on Instagram. Poetry created in this environment, driven by fifteen to sixty seconds of attention and algorithms, bypasses the editorial guardrails of newspapers and magazines and reaches directly to the reader.
Using textual analysis, audiovisual composition, and sociological perspective, this study demonstrates that poetry is no longer limited to words. Calligraphy, background music, and imagery are transforming it into a multimedia art form. Hindustani, a Hindi-English hybrid, and colloquial idioms have brought poetic language closer to the common people. On the other hand, the competition for virality and market pressures have also created the risk of weakening poetry's intellectual complexity, social resistance, and philosophical depth, reducing it to a commodity for emotional consumption.
The research concludes that Instagram poetry is a contemporary document of loneliness, love, and self-awareness in young minds in cities and towns. It needs to be examined with new critical tools, breaking away from old prejudices.

**Hindi:** छपे हुए पन्ने से निकलकर मोबाइल के परदे तक पहुँची इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता अपने माध्यम, संप्रेषण और सौंदर्य-मानकों में बड़े बदलाव से गुज़र रही है। यह शोध-पत्र इंस्टाग्राम पर विकसित 'इंस्टाग्राम-कविता' की भाषा, दृश्य-शिल्प और संवेदना का आलोचनात्मक अध्ययन है। पंद्रह से साठ सेकंड के ध्यान और कलन-विधियों से संचालित इस वातावरण में रची जा रही कविता पत्र-पत्रिकाओं की संपादकीय पहरेदारी को लाँघकर सीधे पाठक तक पहुँचती है।
पाठ-विश्लेषण, दृश्य-श्रव्य संरचना और समाजशास्त्रीय दृष्टि के सहारे यह अध्ययन दिखाता है कि कविता अब शब्दों तक सीमित नहीं रही। सुलेख, पार्श्व-संगीत और चित्र-संयोजन मिलकर उसे बहुमाध्यमी कला बना रहे हैं। हिन्दुस्तानी, हिन्दी-अंग्रेज़ी मिश्रित भाषा और बोलचाल के मुहावरों ने काव्य-भाषा को आम लोगों के क़रीब पहुँचाया है। दूसरी ओर वायरल होने की होड़ और बाज़ार के दबाव ने कविता की बौद्धिक जटिलता, सामाजिक प्रतिरोध और दार्शनिक गहराई को कमज़ोर कर उसे भावनात्मक उपभोग की वस्तु बनाने का जोखिम भी पैदा किया है।
शोध का निष्कर्ष है कि इंस्टाग्राम-कविता महानगरों और कस्बों के युवा मन के अकेलेपन, प्रेम और आत्म-सजगता का तात्कालिक दस्तावेज़ है। इसे पुराने पूर्वाग्रहों से अलग हटकर नए आलोचनात्मक औज़ारों से परखने की ज़रूरत है।

*Corresponding Author:
**Email address:** Dr. N.P. Prajapati (drnirpatprassdprajapati@gmail.com)

**Received:** 16 September 2026; **Revised:** 28 September 2026; **Accepted:** 14 October 2026; **Published:** 18 November 2026
**DOI:** 10.29121/ShodhVichar.v2.i3.2026.149
**Page Number:** 40-45
**Journal Title:** ShodhVichar: Journal of Media and Mass Communication
**Journal Abbreviation:** ShodhVichar J. Media & Mass Commun.
**Online ISSN:** 3107-6408, **Print ISSN:** 3108-270X
**Publisher:** Granthaalayah Publications and Printers, India
**Conflict of Interests:** The authors declare that they have no competing interests.
**Funding:** This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
**Authors' Contributions:** Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
**Transparency:** The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
**Copyright:** © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

**Keywords:** Digital Age, Instagram-Poetry, Short-Poetry, Visual Poetry, Algorithm-Based Aesthetics, Mixed Language, Democratization of Poetry, डिजिटल युग, इंस्टाग्राम-कविता, लघु-कविता, दृश्य-कविता, कलन-विधि आधारित सौंदर्यशास्त्र, मिश्रित भाषा, काव्य का लोकतंत्रीकरण

# प्रस्तावना: डिजिटल माध्यम और कविता का नया पाठक

साहित्य का इतिहास संवेदना और संप्रेषण-माध्यमों के आपसी रिश्ते का इतिहास है। श्रुति और कंठस्थ परंपरा से भोजपत्र, ताड़पत्र और फिर गुटेनबर्ग की मुद्रण-क्रांति तक कविता ने कई रूप बदले हैं। भारतेंदु युग से लेकर छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता तक कविता का मुख्य वाहक छपा हुआ पन्ना ही रहा, चाहे वह 'सरस्वती', 'हंस' या 'कल्पना' जैसी पत्रिकाएँ हों या कविता-संग्रह। छपे पन्ने ने पाठक को एक निजी अवकाश दिया था, जहाँ वह शब्दों के बीच छिपे मौन और अर्थ की परतों में उतर सकता था।

इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में इंटरनेट का विस्तार हुआ, डेटा सस्ता हुआ और स्मार्टफ़ोन हर हाथ में पहुँच गया। इससे संप्रेषण का पूरा भूगोल बदल गया। मोबाइल पर उँगलियों से चलने वाला यह संसार अब जानकारी का स्रोत भर नहीं रहा; यह साहित्यिक विधाओं को नए सिरे से गढ़ने की प्रयोगशाला बन गया है। इंस्टाग्राम जैसे दृश्य-प्रधान मंच ने कविता लिखने और पढ़ने, दोनों का ढंग बदल दिया है।

यहाँ कविता का पाठक पुराना 'सहृदय पाठक' भर नहीं है। वह एक साथ दर्शक, श्रोता और उपभोक्ता है। यह पाठक-वर्ग ज़्यादातर महानगरों और कस्बों की वह युवा पीढ़ी है, जिसके पास किताबों के पन्ने पलटने का समय कम है, पर जो परदा सरकाते हुए अपने भीतर के द्वंद्व, अकेलेपन और प्रेम की पहचान चाहती है। साहित्यिक संस्थाओं और संपादकीय नियंत्रण की सीमाएँ पार कर यह कविता उस मोड़ पर खड़ी है, जहाँ पाठक और रचनाकार के बीच की दूरी लगभग मिट चुकी है।

# शोध-समस्या, उद्देश्य एवं परिकल्पना

## शोध-समस्या

पारंपरिक आलोचना इंस्टाग्राम पर लिखी जा रही कविता को उसकी संक्षिप्तता, सरलता और तात्कालिकता के कारण प्रायः 'छिछली', 'असाहित्यिक' या 'सस्ती लोकप्रिय कविता' कहकर ख़ारिज करती रही है। प्रश्न यह है कि क्या किसी माध्यम की तकनीकी बनावट और संक्षिप्तता का अर्थ अपने-आप काव्य-मूल्यों का ह्रास है? या यह डिजिटल समाज से उपजा संवेदना और शिल्प का नया प्रतिमान है, जिसे समझने के औज़ार हमारी शास्त्रीय आलोचना के पास अभी नहीं हैं?

## शोध के उद्देश्य

1) इंस्टाग्राम की तकनीकी और दृश्य विशेषताओं — शीर्षक-टिप्पणी, हैशटैग, लघु-वीडियो, पार्श्व-संगीत — के कविता-शिल्प पर प्रभाव की जाँच करना।
2) इस कविता में हिन्दी-उर्दू-अंग्रेज़ी के मिश्रण और रोमन लिपि के बढ़ते चलन का समाजभाषावैज्ञानिक विश्लेषण करना।
3) युवा रचनाकारों की संवेदना के प्रमुख बिंदुओं — प्रेम, अकेलापन, मानसिक स्वास्थ्य, लैंगिक अस्मिता और शहरी दबाव — की पड़ताल करना।
4) छायावाद और नई कविता की तुलना में इसकी सौंदर्यगत समानताओं और भिन्नताओं को रेखांकित करना।
5) कलन-विधि, वायरल संस्कृति और बाज़ार के दबाव में काव्य की स्वायत्तता के संकट का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करना।

## परिकल्पनाएँ

**परिकल्पना 1 :** इंस्टाग्राम-कविता छपी कविता का छोटा रूप भर नहीं है। यह दृश्य, ध्वनि और शब्द के मेल से बनी एक स्वतंत्र संकर विधा है।

**परिकल्पना 2 :** इस मंच ने रचनाकारों को संपादकीय पूर्वाग्रहों से मुक्त कर अभिव्यक्ति का अभूतपूर्व लोकतंत्रीकरण किया है, पर कलन-विधि के अनुकूल ढलने की विवशता इसकी वैचारिक और संरचनात्मक गहराई में बाधा बनती है।

# शोध-प्रविधि एवं सामग्री-चयन का आधार

इस शोध में गुणात्मक दृष्टि के अंतर्गत विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक और पाठ-आधारित पद्धति अपनाई गई है। कविता के शाब्दिक विश्लेषण के साथ बहुमाध्यमी विमर्श-विश्लेषण का सहारा लिया गया है, ताकि यह देखा जा सके कि अक्षर-सज्जा, पृष्ठभूमि-चित्र और ध्वनि-पट्टी मिलकर कविता के अर्थ को कैसे बदलते हैं।

अध्ययन-सामग्री का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन के आधार पर किया गया है :

**अनुयायी-संख्या :** ऐसे हिन्दी काव्य-पृष्ठ और कवि चुने गए जिनके अनुयायी पच्चीस हज़ार से पाँच लाख के बीच हैं, ताकि उनकी जन-पहुँच और स्वीकार्यता का आकलन हो सके।

**विषय-विविधता :** प्रेम-विरह के साथ मानसिक अवसाद, दफ़्तरी जीवन की विसंगतियाँ, स्त्री-अस्मिता और अस्तित्वगत अकेलेपन पर लिखने वाले रचनाकारों को वरीयता दी गई।

**प्रारूप-संतुलन :** स्थिर पाठ-चित्र, सरकने वाले बहु-चित्र और आवाज़ के साथ लघु-वीडियो — तीनों रूपों का बराबर प्रतिनिधित्व रखा गया।

**समय-सीमा :** विश्लेषण वर्ष 2020 से 2024 के बीच प्रकाशित रचनाओं पर केंद्रित है, क्योंकि इसी दौर में लघु-वीडियो प्रारूप केंद्र में आया।

# पूर्ववर्ती अध्ययनों का पुनरावलोकन

डिजिटल युग और साहित्य के रिश्ते पर विश्व स्तर पर और भारतीय संदर्भ में विचार शुरू हो चुका है। रूपी कौर की रचनाओं के बाद पश्चिम में इंस्टाग्राम-कविता पर व्यापक बहस हुई। भारतीय संदर्भ में Mandal (2019) ने रेखांकित किया कि इंटरनेट और डिजिटल मंचों ने कविता को छपाई की परिधि से निकालकर अधिक संवादी और बहुमाध्यमी बनाया है, जहाँ दृश्यात्मकता और संक्षिप्तता पहली शर्त बन गई है।

Vaibhav (2020) ने नए माध्यमों पर विचार करते हुए स्थापित किया कि सामाजिक मंचों ने लेखक और पाठक का पुराना विभाजन मिटा दिया है। वहाँ हर पाठक संभावित रचनाकार है और हर रचना तुरंत प्रतिक्रियाओं से घिर जाती है। Shiva (2026) ने 'लघु-कविता' के बदलते व्याकरण पर काम करते हुए बताया कि पंद्रह से तीस सेकंड के ध्यान ने कविता की लय, बिंब और संरचना को सिकोड़कर तीखा और त्वरित असर वाला बना दिया है।

सैकत मजूमदार (2021) और दिव्या द्विवेदी (2023) ने डिजिटल साहित्य के सौंदर्यशास्त्र और कलन-विधियों के सांस्कृतिक प्रभाव पर सैद्धांतिक आधार प्रस्तुत किए हैं। इन अध्ययनों में डिजिटल मंचों के प्रसार और जनवादी चरित्र की पहचान तो हुई है, पर हिन्दी इंस्टाग्राम-कविता की भाषा, शिल्प और संवेदना का सूक्ष्म आलोचनात्मक विश्लेषण अभी आरंभिक अवस्था में है। प्रस्तुत अध्ययन इसी कमी को भरने का प्रयास है।

# मुख्य विवेचन : मंच, भाषा और शिल्प

## मंच की बनावट और कविता का रूप

इंस्टाग्राम की मूल संरचना दृश्य पर टिकी है। यहाँ कविता पहले पढ़ी नहीं जाती, आँख के सामने दिखाई देती है। इस बनावट ने कविता के बाहरी और भीतरी ढाँचे को कई तरह से ढाला है।

**दृश्य-संयोजन और अक्षर-सज्जा :** अधिकतर कवि अपनी पंक्तियाँ सफ़ेद, मटमैली या हल्की काली पृष्ठभूमि पर सादे अक्षरों में रखते हैं। शब्दों के बीच छूटी ख़ाली जगह ख़ुद काव्यात्मक मौन बन जाती है। अक्षर-सज्जा यहाँ लिपि का वाहन भर नहीं, कविता का चित्र-बिंब है।

**लघु-वीडियो और ध्वनि का आवरण :** लघु-वीडियो ने कविता को चलते-फिरते दृश्य में बदल दिया है। कवि अपनी आवाज़ में पाठ करता है और पीछे धीमा उदास पियानो, बारिश की आवाज़ या हल्का संगीत बजता है। यह संगीत सजावट भर नहीं है; श्रोता के अवचेतन पर असर डालकर यह शब्दों की अधूरी गहराई की भरपाई करता है।

**शीर्षक-टिप्पणी का दोहरा पाठ :** यहाँ प्रायः दो पाठ साथ चलते हैं — चित्र में लिखी दो-तीन पंक्तियाँ और नीचे शीर्षक-टिप्पणी में उनका गद्यात्मक या काव्यात्मक विस्तार। कई बार यह टिप्पणी कविता की व्याख्या, उसका संदर्भ या पाठक से सीधा प्रश्न बन जाती है।

**हैशटैग की राजनीति :** हैशटैग यहाँ केवल खोज-शब्द नहीं हैं। वे कविता को ख़ास पाठक-समुदायों तक पहुँचाने वाले तकनीकी पुल हैं। कविता का प्रसार उसकी गुणवत्ता से कम और इस बात से अधिक तय होता है कि उसे किन हैशटैग और चलन से जोड़ा गया।

## भाषा : हिन्दी-उर्दू-अंग्रेज़ी का मेल और रोमन लिपि

इंस्टाग्राम-कविता की भाषा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के भारीपन से मुक्त है। यह वही भाषा है जो महानगरों की युवा पीढ़ी कॉलेज परिसरों और दफ़्तरों में बोलती है।

**सहज हिन्दुस्तानी :** यहाँ शुद्धतावाद की जगह हिन्दी और उर्दू का लचीला मेल दिखता है। 'इश्क़', 'ख़्वाब', 'तन्हाई', 'मुंतज़िर' जैसे शब्द 'स्मृति', 'प्रेम' और 'उदासी' के साथ बिना झिझक घुल जाते हैं।

**अंग्रेज़ी शब्दों की स्वाभाविक उपस्थिति :** भाषा-मिश्रण पर रुक्मिणी भाया नायर के विचारों के अनुरूप, यहाँ 'ऑफ़लाइन', 'इनबॉक्स', 'लास्ट सीन' जैसे रोज़मर्रा के शब्द किसी विदेशी आक्रमण की तरह नहीं, जीवन की सहज काव्य-शब्दावली की तरह आते हैं। किसी के ऑफ़लाइन हो जाने से संदेश-पेटी में छूटा सन्नाटा इस कविता का एक बार-बार लौटने वाला बिंब है।

**रोमन लिपि की चुनौती :** एक बड़ा वर्ग देवनागरी की जगह रोमन लिपि में हिन्दी कविता डालता है। इससे वे युवा जुड़ते हैं जो हिन्दी बोलते-समझते हैं पर देवनागरी पढ़ने का अभ्यास खो चुके हैं। संप्रेषण की दृष्टि से यह व्यावहारिक है, पर लंबे समय में देवनागरी के सौंदर्य और वर्तनी-व्यवस्था के लिए गंभीर संकट भी है।

## शिल्प : लघु रूप, मुक्त छंद और एक-पंक्ति कविता

**अति-संक्षिप्तता :** लंबी कविताओं की जगह यहाँ दो से छह पंक्तियों की लघु-कविता का राज है। यह जापानी हाइकु और उर्दू शेर के संक्षिप्त प्रभाव की डिजिटल पुनर्रचना जैसी लगती है। अपने-अपने परदे पर एक-दूसरे को पढ़ते दो लोगों और बीच में सोते शहर जैसे बिंब इस शिल्प की पहचान हैं।

**मुक्त छंद का सरल ढाँचा :** छंद, यति-गति या मात्रा-गणना का कोई आग्रह नहीं है। यह गद्य-कविता का सुगम रूप है, जहाँ पंक्ति का टूटना ही साँस लेने की जगह तय करता है।

**एक-पंक्ति कविता :** सूक्ति जैसी एक-पंक्ति कविताएँ बहुत चलन में हैं। ये परदा सरकाते अँगूठे को रोकने के लिए अचानक कोई दार्शनिक या भावनात्मक कौंध पैदा करना चाहती हैं।

**दृश्य-श्रव्य सह-सृजन :** यहाँ रचनाकार अपनी कविता का दृश्य-श्रव्य निर्देशक भी है। पृष्ठभूमि का प्रकाश, अक्षरों की हलचल और आवाज़ का कंपन मिलकर एक संयुक्त कला-रूप रचते हैं।

# संवेदना और परंपरा से संवाद

## संवेदना : प्रेम, अकेलापन, आत्म-स्वीकृति और स्त्री-स्वर

संवेदना के स्तर पर इंस्टाग्राम-कविता बीसवीं सदी के जन-आंदोलनों और विचारधाराओं से हटकर व्यक्ति की सूक्ष्म अनुभूतियों की ओर मुड़ी है।

**डिजिटल युग का प्रेम :** यहाँ प्रेम छायावाद का अमूर्त प्रेम नहीं है। यह संदेश-खिड़की, 'अंतिम बार देखा गया', अनपढ़े संदेश और अनफ़ॉलो किए जाने के डर का प्रेम है। इसमें मिलन का उल्लास कम और अधूरी बातचीत की कसक अधिक है। संदेश देखकर भी उत्तर न देने को चिट्ठी जला देने से अधिक निर्मम मानने वाली पंक्तियाँ इसी मनोभूमि से निकलती हैं।

**महानगरीय अकेलापन और मानसिक स्वास्थ्य :** आज की पीढ़ी जिस अलगाव, बेचैनी और अवसाद से जूझ रही है, इंस्टाग्राम-कविता उसका खुला इक़रारनामा है। यहाँ अवसाद वर्जित विषय नहीं, साझा की जाने वाली मानवीय विवशता है। भीड़ भरे शहरों के किराए के कमरों में रहने वाले युवा का अकेलापन यहाँ सजीव होकर उभरता है।

**आत्म-स्वीकृति और टूटन से उबरना :** रूपी कौर की परंपरा के प्रभाव में हिन्दी इंस्टाग्राम-कविता में ख़ुद को स्वीकारने, अपनी कमियों से प्रेम करने और किसी टूटन के बाद फिर से सँवरने का विमर्श प्रबल है।

**मुखर स्त्री-स्वर :** जो युवतियाँ अपनी इच्छाएँ, देह-बोध और मानसिक द्वंद्व परिवार या समाज के सामने नहीं कह पाती थीं, उन्हें इंस्टाग्राम ने छद्म नामों या खुले खातों के ज़रिए बेबाक अभिव्यक्ति का मंच दिया है। यह स्त्री-स्वर घरेलू सीमाओं से निकलकर पितृसत्तात्मक कुंठाओं पर सीधा प्रहार करता है।

## परंपरा से संवाद : छायावाद, नई कविता और जनवादी कविता

इंस्टाग्राम-कविता को परंपरा से काटकर नहीं देखा जा सकता। यह परंपरा का नकार भी है और उसका सरलीकृत विस्तार भी।

**छायावाद से तुलना :** छायावाद में वैयक्तिकता, आत्मपरकता और सूक्ष्म प्रेम की प्रधानता थी, जैसा प्रसाद और महादेवी में दिखता है। इंस्टाग्राम-कविता में भी वैयक्तिकता केंद्रीय है, पर छायावाद की रहस्यमय गरिमा, दार्शनिक उदात्तता और तत्सम पदावली से यह बहुत दूर है। यहाँ रहस्य की जगह सीधी प्रत्यक्षता है।

**नई कविता से तुलना :** अज्ञेय, मुक्तिबोध और शमशेर की नई कविता ने आधुनिक मनुष्य के संत्रास और मोहभंग को वाणी दी थी, और उसमें शिल्प की जटिलता तथा नए बिंबों की खोज थी। इंस्टाग्राम-कविता उस संत्रास को ग्रहण करती है, पर उसकी बौद्धिक बुनावट और भाषा की बहुस्तरीयता छोड़कर उसे सपाट बना देती है।

**जनवादी कविता से तुलना :** धूमिल, गोरख पांडेय और आलोकधन्वा की कविता में व्यवस्था-विरोध, राजनीतिक चेतना और श्रमजीवी वर्ग का संघर्ष केंद्र में था। इंस्टाग्राम-कविता अधिकतर इस राजनीतिक यथार्थ से कटी हुई है। यह व्यवस्था से टकराने के बजाय अपने भीतर सिमटती है; इसका प्रतिरोध राजनीतिक कम, वैयक्तिक और भावनात्मक अधिक है।

## आलोचनात्मक मूल्यांकन : द्वंद्व और सीमाएँ

इंस्टाग्राम-कविता का मूल्यांकन करते समय दो अतियों से बचना ज़रूरी है — पूरी तरह नकार देना या आँख मूँदकर सराहना करना।

- **लोकप्रियता बनाम गहराई :** जब रचना की सफलता पसंद, साझा और दर्शक-संख्या से तय होने लगे, तो कलात्मक गुणवत्ता गौण हो जाती है। वही कविता चलती है जो तुरंत समझ में आ जाए। नतीजा यह कि कविता से प्रतीकों की परतें, वैचारिक तल्ख़ी और अर्थ की गंभीरता छीजने लगती है।
- **कलन-विधि का शासन :** सामाजिक मंचों की कलन-विधि उन्हीं रचनाओं को आगे बढ़ाती है जो उपयोगकर्ता को देर तक रोके रखें या जिन्हें तुरंत साझा किया जा सके। कवि पाठक के लिए कम और कलन-विधि के अनुकूल शब्दों तथा चलन वाली धुनों के दबाव में अधिक लिखने लगता है। इससे साहित्यिक स्वायत्तता को चोट पहुँचती है।
- **कविता का उपभोग की वस्तु बनना :** पाठक परदा सरकाते हुए एक क्षण में पसंद का निशान दबाता है और अगले ही क्षण आगे बढ़ जाता है। इस त्वरित उपभोग ने कविता को झटपट भोजन जैसा बना दिया है — स्वाद तुरंत मिलता है, पर आत्मिक पोषण नहीं। बिना श्रेय दिए रचनाओं की नक़ल इस मंच का एक और स्याह पहलू है।
- **लोकतंत्रीकरण की संभावनाएँ :** इन सीमाओं के बावजूद यह सच है कि इस मंच ने प्रकाशन की अभिजात और संस्थागत इजारेदारी तोड़ी है। आज गाँवों, छोटे शहरों, हाशिये के वर्गों और युवा स्त्रियों को किसी संपादक की संस्तुति के बिना विशाल पाठक-वर्ग तक पहुँचने की स्वतंत्रता मिली है। इसने हज़ारों ऐसे युवाओं को कविता से जोड़ा है, जो शायद छपी किताबों की दुनिया में कभी न आते।

# निष्कर्ष एवं आगे के शोध की दिशाएँ

## निष्कर्ष

इस विवेचन से स्पष्ट है कि इंस्टाग्राम पर विकसित हो रही हिन्दी कविता को साहित्य का ह्रास मानकर ख़ारिज नहीं किया जा सकता, और इसे काव्य-चेतना का शिखर भी नहीं कहा जा सकता। यह माध्यम बदलने से पैदा हुई एक ऐतिहासिक काव्यात्मक संक्रांति है।

इंस्टाग्राम-कविता ने दृश्य, श्रव्य और शब्द को मिलाकर एक नई डिजिटल लोक-संस्कृति की नींव रखी है। इसने भाषा को कृत्रिम पांडित्य से मुक्त कर बोलचाल के जीवंत यथार्थ से जोड़ा है। कलन-विधि के बाज़ारू दबाव और जल्दी प्रसिद्धि की चाह ने इसमें सतहीपन, भावुकता के अतिरेक और वैचारिक रिक्तता का ख़तरा बढ़ाया है, फिर भी यह मंच अपने समय के युवाओं की धड़कन दर्ज करने में सफल रहा है। साहित्य का भविष्य छपाई और डिजिटल के टकराव में नहीं, दोनों के आपसी संवाद और संतुलन में है।

## आगे के शोध की दिशाएँ

1) **कलन-विधि आधारित काव्यशास्त्र :** सामाजिक मंचों की कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित कलन-विधियाँ रचनाकारों के विषय-चयन और रूप-रचना को कैसे बदल रही हैं, इस पर स्वतंत्र अंतर-अनुशासनात्मक अध्ययन।
2) **स्त्री-अभिव्यक्ति का समाजशास्त्र :** इंस्टाग्राम पर स्त्री-रचनाकारों की बढ़ती संख्या, नए देह-विमर्श और भावनात्मक स्वायत्तता का विश्लेषण।
3) **पाठक-प्रतिक्रिया का अध्ययन :** रचना के नीचे आने वाली पाठकीय टिप्पणियों को अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखना।
4) **देवनागरी बनाम रोमन लिपि :** नई पीढ़ी की भाषिक अस्मिता पर रोमन लिपि के प्रयोग के दीर्घकालिक प्रभावों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन।

## REFERENCES


Chaturvedi, J. (2013). Media Samagra-4: Mass Media and Mass Culture (मीडिया समग्र-4: जनमाध्यम और मासकल्चर). Swaraj Prakashan, 111–112.

Coeckelbergh, M. (2020). AI Ethics (एआई एथिक्स). MIT Press.

Dwivedi, H. P. (2010). Literature and Society (साहित्य और समाज). Bharatiya Jnanpith.

Hayles, N. K. (2017). E-Literature (ई-लिटरेचर). In The Cambridge Companion to Literature and the Posthuman (245–261). Cambridge University Press.

Mandal, S. (2019). The Form of Hindi Poetry in Digital Media: Changing Dimensions of Expression, Sensibility, and Craft (डिजिटल माध्यमों में हिंदी कविता का स्वरूप: अभिव्यक्ति, संवेदना और शिल्प के बदलते आयाम). International Journal of Humanities and Arts, 1(2), 44–48.

Menon, N., Shanmugapriya, T., Joseph, J., and Sutton, D. (Eds.). (2023). Indian Electronic Literature Anthology (इंडियन इलेक्ट्रॉनिक लिटरेचर एंथोलॉजी). IIT Indore.

Nimbore, A. B., and Shenkar, B. T. (2026). Hindi Language and Literature in the Digital Age (डिजिटल युग में हिंदी भाषा और साहित्य). International Journal of Advanced and Applied Research, 7(35), 1–6.

Rai, T. (2024). Deep Water Penetration (गहरे पानी पैठ). NN Publications, 72.

Rani, P. (2025). The Role of the Hindi Language in the Digital Age (डिजिटल युग में हिंदी भाषा की भूमिका). International Journal of Applied Research, 11(5), 188–191.

Rettberg, S. (2018). Electronic Literature (इलेक्ट्रॉनिक साहित्य). Polity Press.

Shiva. (2026). The Digital Age and Hindi Poetry: The Changing Grammar of Short Poetry in the Era of Social Media Culture and Its Socio-Cultural Implications (डिजिटल युग और हिंदी कविता: सोशल मीडिया संस्कृति के दौर में 'लघु-कविता' का बदलता व्याकरण और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक निहितार्थ). Lyceum India Journal of Social Sciences, 3(10), 127–131.

Singh, A. S., and Sharma, R. (2026). Social Media, Artificial Intelligence, and the Future of Hindi Literature (सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी साहित्य का भविष्य). Multidisciplinary International Journal, 8(3), 45–53.

Singh, N. (2012). New Contexts of Literature (साहित्य के नए संदर्भ). Vani Prakashan.

Singh, Y. P. (2025). Computer Intelligence: The Creative Journey of Artificial Intelligence (कम्प्यूटर की मेधा: कृत्रिम मेधा की सृजनशील यात्रा). Lokbharati Prakashan, 31–34.

Srivastava, A., and Nigam, M. (2026). Digital Narratives: Confluence of Indian Literature and Digital Media (डिजिटल नैरेटिव्स: कॉन्फ़्लुएंस ऑफ़ इंडियन लिटरेचर एंड डिजिटल मीडिया). International Journal of Multidisciplinary Research, 2(3), 13–19.

Tiwari, V. P. (1989). Makers of Indian Literature: Hazari Prasad Dwivedi (भारतीय साहित्य के निर्माता: हजारीप्रसाद द्विवेदी). Sahitya Akademi.

Vaibhav, A. (2020). New Media and Hindi Literature: Current Situation (न्यू मीडिया और हिन्दी साहित्य: वर्तमान स्थिति). Research Academy for International Journals of Multidisciplinary Research, 8(10), 29–37.